Bihar Board Class 7 Social Science History Notes
Chapter 6 शहर, व्यापारी एवं कारीगर

शहर, व्यापारी एवं कारीगर

पाठ का सार संक्षेप

पाठ में नगों के चार प्रकार बताये गये हैं :

1. प्रशासनिक नगर
2. मंदिर एवं तीर्थ स्थलीय नगर
3. वाणिज्यिक नगर तथा
4. बन्दरगाह अर्थात् पत्तनीय नगर ।

प्रशासनिक नगर सत्ता के केन्द्र थे । इन्हें राजधानी मान सकते हैं । शासक और रनव अधिकारी, परिवार तथा नौकर-चाकर रहते थे । शासक यहीं से सारा करता था । राज्य कर्मचारियों की आवश्यकता पूर्ति के लिए दुकानें हुआ करता थीं । यहाँ थोक और खुदरा, दोनों तरह के व्यापारी रहते थे । मंदिर एवं तीर्थ स्थलीय नगरों में भी दुकानें होती थीं । तीर्थ यात्रियों की आवश्यकता पूर्ति ये ही करते थे । वहाँ की प्रमुख एवं प्रसिद्ध वस्तुएँ दुकानकार ही बेचते थे।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है वाणिज्यिक नगर वाणिज्य व्यापार के केन्द्र थे । खास-खास वस्तुओं के लिए खास-खास केन्द्र थे । बन्दरगाह या पत्तनीय नगर विदेश व्यापार के केन्द्र थे । गाँवों में तैयार या उपजायी वस्तुएँ व्यापारिक नगरों में एकत्र होती थीं और वहाँ से पत्तन तक पहुँचाई जाती थी । वहाँ से

जहाजों द्वारा विदेशों में जाती थीं । बाद में विदेशी व्यापारियों के आने के कारण ये प्रशासनिक और सैनिक केन्द्र का रूप लेने लगे।

नगरों के मुख्य आकर्षण मडियाँ थीं । शहरों के बाजारों में देश-विदेश के व्यापारी आया-जाया करते थे । देश का आंतरिक व्यापार विकास पर था । बैलों और घोड़ों पर लादकर बंजारे यहाँ से वहाँ माल पहुँचाते रहते थे । आंतरिक व्यापार में बंजारों का प्रमुख स्थान था । ये सेना के लिये भी जरूरी सामान मुहैया कराते थे।

बड़े व्यापार कुछ खास-खास समुदाय ही करते थे, जैसे : उत्तर भारत में मुलतानी, गुजरातनी, दक्षिण भारत के मलय, चेट्टी एवं मूर । मूर व्यापारी अरब, तुर्की, खुरासान के मुस्लिम व्यापारी थे । भारत के पश्चिम तट पर सूरत, भड़ौच, खंभात, कालीकट, गोआ आदि बन्दरगाहों से मसाला, सूती कपड़ा, नील, जड़ी-बूटी पश्चिमी देशों में भेजे जाते थे । पूर्वी तट के बन्दरगाहों में हुगली, सतगाँव, पुलीकट, मसुलीपट्टनम, नागपट्टनम से कपड़ा, अनाज, सती धागा आदि दक्षिण पूर्व एशिया के देशों को भेजे जाते थे !

भारत में सड़कों का जाल बिछा था । कुछ सड़क बन्दरगाहों से जुड़े थे । नदी मार्ग की भी प्रमुखता थी । बैलगाड़ी, बैल, घोड़े, खच्चर आदि व्यापारिक माल लाने-ले-जाने के काम करते थे । लेन-देन में सिक्कों

https://www.evidyarthi.in/

की प्रमुखता थी । व्यापारियों का एक वर्ग सर्राफों का था । हँडियों का चलन भी था । सर्राफ बैंकर का भी काम करते थे ।

यूरोप के व्यापारी कपड़ों तथा मसालों के लिये भारत की खोज में लगे हुए थे । इसमें 1498 में पुर्तगाल का नाविक वास्को-डि-गामा उतमाशा अंतरीप होते हुए भारत पहुँचने में सफल हो गया । पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर से लेकर लाल सागर तक के क्षेत्र में अपने को महत्त्वपूर्ण जहाजी शक्ति का इस्तेमाल कर इस रास्ते पर एकाधिकार प्राप्त कर लिया ।

पुर्तगालियों ने गोवा, कालीकट, कोचीन, हुगली, मयलापुर में अपने सैनिक अड्डे स्थापित कर लिये। काली मिर्च, नील, शोरा, सूती वस्त्र, घोड़े उनके व्यापार की मुख्य वस्तुएँ थीं। सतरहवीं सदी में अन्य यूरोपीय देशों ने भी भारत में अपनी पहुँच दर्ज कराई। इनमें इंग्लैंड, हॉलैंड तथा फ्रांस के व्यापारी प्रमुख थे। इन्होंने तटीय क्षेत्रों में अपनी कोठियाँ बनाईं। व्यापार के सिलसिले में इन चारों युरोपीय देशों में संघर्ष हुआ, जिनमें सबको दबाकर अंग्रेज आगे निकल गये । ये छल और बल दोनों का इस्तेमाल करते थे।

https://www.evidyarthi.in/